



HarghaPanditji

॥ होलिका दहन विधि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ होलिका दहन विधि ॥

होलिका दहन होली पर्व का महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान है। इसे बुराई पर अच्छाई की विजय और नकारात्मकता के अंत का प्रतीक माना जाता है। होलिका दहन की तिथि और शुभ मुहूर्त स्थान तथा पंचांग के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं।

1. होलिका दहन की तैयारी

होलिका दहन के लिए पहले से एक खुले और सुरक्षित स्थान का चयन करें। वहाँ लकड़ी, सूखी टहनियाँ और उपले आदि रखकर होलिका तैयार की जाती है। परंपरा के अनुसार होलिका के साथ प्रह्लाद का प्रतीक भी स्थापित किया जाता है।

2. पूजा सामग्री

पूजा के लिए सामान्यतः इन सामग्रियों का उपयोग किया जाता है:

रोली और अक्षत

मौली/कलावा

फूल और माला

गुड़

नारियल

फल

गेहूँ या जौ की बालियाँ

सूखा नारियल

कपूर

धूप और दीपक

जल

पूजा के लिए अन्य पारंपरिक सामग्री

3. पूजा की विधि

होलिका दहन स्थल की स्वच्छता करें।
स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
भगवान गणेश, भगवान विष्णु और अग्निदेव का स्मरण करें।
होलिका और प्रह्लाद के प्रतीक का पूजन करें।
होलिका पर रोली, अक्षत, फूल, मौली आदि अर्पित करें।
जल, फल और गुड़ आदि अर्पित करें।
परिवार की सुख-समृद्धि और मंगल की प्रार्थना करें।
होलिका की परिक्रमा करें।
शुभ मुहूर्त में होलिका दहन किया जाता है।
अग्नि प्रज्वलित होने के बाद श्रद्धापूर्वक प्रार्थना और मंत्र-जाप करें।

4. होलिका दहन मंत्र

ॐ होलिकायै नमः।
इसके साथ भगवान विष्णु का मंत्र भी जप सकते हैं:
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

5. होलिका दहन के बाद

होलिका दहन के बाद परंपरा के अनुसार अग्नि की परिक्रमा की जाती है और जौ या गेहूँ की बालियाँ सेंकी जाती हैं। कई स्थानों पर होलिका की अग्नि की राख को घर लाने की भी परंपरा है। इन रीति-रिवाजों में क्षेत्रीय और पारिवारिक परंपराओं के अनुसार अंतर हो सकता है।